B.A I+III Yr.

(2) हर्षवर्धन — बाण ने अपने 'हर्षचरित' तथा ह्वेनसांग ने अपने यात्रा-विवरण में हर्ष के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है। हर्षवर्धन का राज्यकाल 606(६०६ ई०) से 648 (६४८) ई० तक सर्वमान्य है। ह्वेनसांग हर्षवर्धन के राज्यकाल में ही 629 (६२९) ई० से 641 ई० (६४१ ई०) तक भारत का भ्रमण किया था।

पिता और बड़े भाई की मृत्यु के पश्चात अल्पवय में इन्हें राज्य की प्राप्ति हो गयी थी और इन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था। अपनी कूटनीतिक क्षमता से थोड़े समय में ही अल्पकाय स्थाणीश्वर (थानेसर, कुरुक्षेत्र) को इतना बड़ा बनाया कि प्रायः पूरा उत्तरी भारत (आर्यावर्त) इनके अधिकार में आ गया। दक्षिण में नर्मदा तट पर उन्होंने चालुक्य-नरेश पुलकेशी (द्वितीय) से भी युद्ध किया, किन्तु पराजित हो गए। ये एक कुशल राजा के अतिरिक्त विद्वान, कवि और गुणग्राही भी थे। बाण आदि कवियों को उनसे सम्मान प्राप्त था।

हर्ष ने तीन रूपकों 'प्रियदर्शिका', 'रत्नावली' तथा 'नागानन्द' की रचना की। इनकी प्रस्तावना में हर्ष के इनके रचयिता होने की पुष्टि मिलती है — परिषदेषा गुणग्राहिणी' (प्रिय- 'श्री हर्षो निपुणः कविः दर्शिका 1/3, रत्नावली 1/5)

(क) प्रियदर्शिका — यह चार अंकों की नाटिका है। इसमें वत्सराज उदयन तथा उनकी ज्येष्ठा रानी वासवदत्ता की मौसरी बहन प्रियदर्शिका की प्रेमकथा है। अरण्य में प्राप्त होने के कारण उसका नाम आरण्यिका भी है। तृतीय अंक का गर्भनाटक कवि की मौलिक कल्पना है। इसी कथानक को कवि ने प्रौढ़तर रूप में रत्नावली में वर्णित किया है, किन्तु उसमें नायिका बदल जाती है।

(ख) रत्नावली — यह चार अंकों की नाटिका है। इसमें राजा उदयन तथा रत्नावली, जो सिंहल देश की राजकुमारी है तथा प्रियदर्शिका नाम से भी जानी जाती है, उनके प्रेम और विवाह

का प्रसंग है। राजा उदयन के प्रासाद में रत्नावली समुद्र-दुर्घटना से बचकर आती है, इसलिए उसका नाम सागरिका है। रत्नावली की रचना प्रियदर्शिका की कथावस्तु अपने नाटकीय मोड़ों से गुजरती है। बाद के साहित्यकारों ने इनका बाहुल्य-प्रयोग किया है। दशरूपक और ~~वेणीसंहार में~~ साहित्य-दर्पण में नाट्य-विषयों के उदाहरण रत्नावली या वेणीसंहार से दिए गए हैं। अतः इनका शास्त्रीय-महत्व है। विशेष रूप से इसमें पाँच संधियों के 64 (६४) अंगों का प्रयोग महत्वपूर्ण है।

(ग) <u>नागानन्द</u> — यह पाँच अंकों का नाटक है। इसमें मुख्यतः विद्याधर राजकुमार जीमूतवाहन को अपनी बलि देकर शंखचूड़ नामक सर्प का गरुड़ से रक्षा करने का वर्णन है। 'बृहत्कथा' में संकलित एक बौद्ध धर्म कथा पर यह आश्रित है। 'बेताल पञ्चविंशति' में इसका एक स्वरूप देखने को मिलता है। हर्ष ने मूलकथा को परिवर्तित करने में पौराणिक स्वरूप का आश्रय लिया है। इसका नायक बौद्ध होने पर भी पौराणिक देवताओं के प्रति भक्ति रखता है।

विद्याधर राजकुमार जीमूतवाहन का मित्रावसु की बहन 'मलयवती' से प्रेम और विवाह का इसमें वर्णन है। रत्नावली के समान इसका कथानक कसा हुआ नहीं है। इसकी लोकप्रियता बौद्ध जगत में विशेष रूप से है।

हर्ष ने अपने रूपकों में कथानक-संयोजन, चरित्र-चित्रण एवं रस की दृष्टि यथासाध्य उत्कृष्ट नाट्यकला का परिचय दिया है। प्रियदर्शिका में गर्भनाटक जो उनकी मौलिक कल्पना है तो रत्नावली में इन्द्रजाल के समावेश से अतिप्राकृत तत्व के प्रति आस्था दिखाकर उन्होंने कविगत स्वच्छन्दता का भी परिचय दिया है। इन रूपकों में कई वर्णन उद्दीपन के रूप में बड़े ही उत्कृष्ट शैली के हैं।

Scanned with CamScanner